Delhi School of Journalism

University of Delhi

Digital Media Workshop by Harsh Ranjan – 17 February 2018

17 फरवरी 2018 (दिल्ली स्कूल ऑफ़ जर्नलिज्म)- 17 फरवरी 2018 हमारे कॉलेज दिल्ली स्कूल ऑफ़ जर्नलिज्म के दूसरे सेमेस्टर के आरंभ के साथ प्रथम सेमिनार में पत्रकार हर्ष रंजन जी से रूबरू होने का मौका मिला | इनका स्वागत डीएसजे की छात्रा शिवानी ने उनकी जीवन की तमाम उपलब्धियों को बता कर किया |अपने वक्तव्य के आरम्भ में हर्ष जी ने कहा की मेरा नाम हर्ष रंजन है, पेशे से पत्रकार हूँ , पहले प्रिंट का था फिर टीवी के लिए काम किया और अब डिजिटल में आ गया | उन्होंने कहा की अगर आप एक कामयाब जर्नलिस्ट बनना चाहते है तो आपको हमेसा छात्र बनना पड़ेगा, मीडिया सिर्फ विचारो पे चलती है, एक ही आइडिया से फिल्म बन जाती है उसी से धारावाहिक उसी से न्यूज़ स्टोरी.| और आईडिया आता है आप जैसे नवजवानों के दीमाग में....

जर्नलिज्म तीन चीजो पर चलता है.

१ : सवाल {आपके दीमाग में हर वक़त सवाल उपजाने चाहिए }

२ : प्रतिक्रिया {हर चीज़ पे प्रतिक्रिया देना चाहिए }

३ : कारण ढूँढना {किसी भी चीज का कारण ढूँढना चाहिए }

और इन सब का पिता है पृष्ठभूमि : पृष्ठभूमि किसी भी चीज को आपसे उस रूप में जोडती है जो आपके लिए आवश्यक है| उन्होंने बताया की कोई भी संवाद पीपीएफ पे आधारित होता है |पहले प्रेजेंट फिर पास्ट उसके बाद फ्यूचर का जिक्र होता है | उन्होंने छात्रों को बताया की कैसे कोई चीजे जितने छोटे से छोटे शब्दों में लिखी जा सकती है |. और किसी भी चीज को छोटे रूप में ढालना ही पत्रकारिता की सबसे बड़ी चुनौती होती है| .इसके लिए उन्होंने कुछ उदाहरणों के माध्यम से समझाया जैसे ..(दिल्ली में हड़ताल के कारण बस नही चल रही थी तो आज तक

ने हैडलाइन चलाया की ....."आज बे-बस हुई दिल्ली) और छात्रों को समझाया की कैसे अच्छी से अच्छी हैडलाइन हम बहुत ही रोचक ढंग से लिख सकते है ....डिजिटल मीडिया को बताते हुए उन्होंने कहा की : कैमरा टीवी रेडियो फ़ोन रिकॉर्डर सब कुछ एक ही डिवाइस में समाहित कर लेना ही डिजिटल है |

अंत में उन्होंने बताया की आज के वक़्त में समय की बड़ी ही कमी है कोई भी अपना वक़्त किसी बड़ी चीज को पढने में नही गवाना चाहिए इसीलिए तो इन्टरनेट पर २० सेक का वीडियो रातो-रात वायरल हो जाता है | जबकि लम्बे-लम्बे वक्तव्य नही .....सेमिनार का अंत दिल्ली स्कूल ऑफ़ जर्नलिस्म की विशेष कार्याधिकारी श्रीमति मनस्वनी योगी जी ने उनके अभिवादन के साथ समाप्त किया |

With Inputs from गरिमा सिंह and शिवानी, II Semester BJ)